

## आलस्य और अलबेलापन - 27

**अव्यक्त बापदादा :-**

» \_ » वर्तमान समय का विशेष अटेन्शन-व्यर्थ संकल्पो की समाप्ति - सभी अपने को समर्थ आत्मायें समझते हो? **समर्थ आत्मायें अर्थात् जिनका व्यर्थ का खाता समाप्त हो।** नहीं तो ब्राह्मण जीवन में व्यर्थ संकल्प, व्यर्थ बोल, व्यर्थ कर्म बहुत समय व्यर्थ गंवा देते हैं जितनी कमाई जमा करने चाहो उतनी नहीं कर सकते हो। व्यर्थ का खाता समर्थ बनने नहीं देता। **अब व्यर्थ का खाता समाप्त करो।** जब नया चौपड़ा रखते हो तो पुराने को खत्म कर देते हो ना। **तो वर्तमान समय यही विशेष अटेन्शन रखो कि व्यर्थ का समाप्त कर सदा समर्थ रहें। मास्टर सर्वशक्तिवान जो चाहो वह कर सकते हो।** जैसे किसको तन की वा धन की शक्ति है तो जो चाहो वह कर सकता है, अगर शक्ति नहीं तो चाहते भी मजबूर हो जाता। **ऐसे आप मा. सर्वशक्तिवान क्या नहीं कर सकते। सिर्फ अटेन्शन। बार-बार अटेन्शन चाहिए।**

» \_ » अमृतवेले अटेन्शन दिया, रात को दिया, बाकी मध्य में अलबेलापन हो गया तो रिजल्ट क्या होगी? व्यर्थ का खाता समाप्त नहीं होगा। कुछ न कुछ पुराना खाता रह जायेगा। **इसलिए बार-बार यही अटेन्शन दो कि हम मा. सर्वशक्तिवान हैं।** चैकिंग चाहिए अच्छी तरह से। क्योंकि माया अभी भी अपनी बारी लेने के लिए होशियार बैठी है। वह अन्त में सबसे ज्यादा होशियार हो बैठी है क्युकी सदा के लिए विदाई लेनी है ना। तो अपनी होशियारी तो दिखाएगी ही ना। इसलिए सदा अटेन्शन रखो। क्लास में गये, याद में बैठे उस समय तो अटेन्शन रहता है लेकिन बार-बार अटेन्शन। और **जिसका बार-बार अटेन्शन है उसकी निशानी है- सब टेन्शन से परे।** लाडले तो हो, बाप के बने, श्रेष्ठ भाग्य का सितारा चमका और क्या चाहिए। **सिर्फ यही छोटा-सा काम दिया है-कि बार-बार बुद्धि द्वारा अटेन्शन रखो। (18.11.1981)**

» \_ » एक 'बाबा' शब्द भी जो बार-बार कहते हो, वह हर बार नया अनुभव होना चाहिए। जैसे शुरू में जब आये तब भी बाबा शब्द कहते थे, मधुबन में आये तब भी यही बोला और अब जब जायेंगे तब भी 'बाबा' शब्द बोलेंगे लेकिन पहले बोलने में और अब के बोलने में कितना अन्तर होगा! यह अनुभव तो है ना? **बाबा शब्द तो वही है लेकिन ज़िगरी प्राप्ति के आधार पर वही बाबा शब्द अनुभव में आगे बढ़ता गया।** तो फर्क पड़ता है ना!

» \_ » ऐसे सब गुणों में भी रोज नया अनुभव करो। शान्त स्वरूप तो हो लेकिन शान्ति की अनुभूति किस प्वाइन्ट के आधार पर होती है जैसे देखो **मैं आत्मा परमधाम निवासी हूँ, इससे भी शान्ति की अनुभूति होती है और - मैं आत्मा सतयुग में सुखशान्ति स्वरूप हूँगी उसका अनुभव देखो तो और होगा।** ऐसे ही कर्म करते हुए अशान्ति के वातावरण में होते भी - **मैं आत्मा शान्त स्वरूप हूँ, उसकी अनुभूति करते हो तो उसका अनुभव और होगा।** फर्क हो गया ना तीनों में हैं तो शान्त स्वरूप।

» \_ » ऐसे रोज उस शान्त स्वरूप की अनुभूति में भी प्रोग्रेस हो। **कब किस प्वाइन्ट से शान्त स्वरूप की अनुभूति करो, कभी किससे तो रोज का**

**नया अनुभव होगा और सदा इसी में बिजी रहेंगे कि नया नया मिले।** नहीं तो क्या होता है चलते-चलते वही याद की विधि, वही मुरली सुनने और सुनाने की विधि, फिर वही बात कहाँ-कहाँ कामन अनुभव होने लगती है। इसलिए फिर उमंग भी जैसे सदा रहता है वैसे ही रहता है, आगे नहीं बढ़ता। और उसकी रिजल्ट में फिर कहाँ अलबेलापन भी आ जाता है। यह तो मुझे आता ही है, यह तो जानते ही हैं। तो उड़ती कला के बजाय ठहरती कला हो जाती है। इसलिए स्वयं तथा जिन आत्माओं के लिए निमित्त बनते हो, उन्हें सदा नवीनता का अनुभव कराने के लिए यह विधि जरूर चाहिए। समझा!

➡ \_ ➡ आप सब मैजारिटी सेवा के निमित्त आत्मायें हो ना तो यह विशेषता जरूर धारण करनी है। रोज़ कोई न को प्वाइन्ट निकालो - शान्त स्वरूप के अनुभूति की प्वाइन्टस क्या हैं? ऐसे प्रेम स्वरूप, आनन्द स्वरूप सबकी विशेष प्वाइन्ट बुद्धि में रखते हुए रोज़ नयानया अनुभव करो। **सदा ऐसे समझो कि आज नया अनुभव करके औरों को कराना है।** फिर अमृतवेले बैठने में भी बड़ी रुचि होगी। नहीं तो कभी-कभी सुस्ती की लहर आ जाती है। जहाँ नई चीज़ मिलती है वहाँ सुस्ती नहीं होती है और वही-वही बातें हैं तो सुस्ती आने लगती है। तो समझा क्या करना है? तरीका समझ में आया?

➡ \_ ➡ अभी कोई प्रश्न पूछना है तो पूछो - विदेशियों को वैसे भी वैरायटी अच्छी लगती है। जैसे पिकनिक में नमकीन भी चाहिए, मीठा भी चाहिए। और वैरायटी प्रकार का चाहिए तो जब भी अनुभव करने बैठते हो तो समझो अभी बापदादा से वैरायटी पिकनिक करने जा रहे हैं। पिकनिक का नाम सुनकर ही फुर्त हो जायेंगे। सुस्ती भाग जायेगी। वैसे भी आप लोगों को पिकनिक करना, बाहर में जाना अच्छा लगता है ना! **तो चले जाओ बाहर, कभी परमधाम में चले जाओ, कभी स्वर्ग में चले जाओ, कभी मधुबन में आ जाओ, कभी लण्डन सेन्टर में चले जाओ, कभी आस्ट्रेलिया पहुँच जाओ। वैरायटी होने से रमणीकता में आ जायेंगे। (14.03.1982)**

---

➤➤ व्यर्थ

➡ \_ ➡ बिना मतलब का पूरा दिन व्यर्थ चलता रहता है..बाबा कहते हैं सोच कर सोचो, तोल कर सोचो, आगे पीछे का ध्यान रखके कर्म करना है.. इसके लिये विशेष अटेशन रखना है..

→ संकल्प, बोल, कर्म पर जितना ध्यान रखेंगे तो व्यर्थ से बच सकेंगे..

→ जितना कर्मों की गुह्य गति को जानकर संकल्प करेंगे उतना श्रेष्ठ संकल्प होगा..

→ अंतिम समय में आलस अलबेलापन और प्रकृति क ५ तत्व जम कर वार करने आयेगे उसके लिये बाबा कहते हैं अभी से समर्थ बनो..

»→ \_ »→ हम जो भी बोल रहे हैं, सुना रहे हैं, जो भी कर्म कर रहे हैं..उसकी चेकिंग करनी है, अटेशन रखना है की व्यर्थ है की समर्थ है क्युकी माया कैसे किसी को अपना बनाना है..वह अरछी रीती से जानती है..अपने ग्राहक को फसाने माया होशियार हो बैठी है..

→ कैसे भी ब्राह्मण आत्माओ को फसा के फरिश्ता बनने नहीं देती है..

»→ \_ »→ सारे दिन में यह अटेशन रखना है..व्यर्थ से मुक्त हो समर्थ रहना है..अपने को चेक करना है..

- व्यर्थ बोल तो नहीं बोला..
- किसी को दुःख नहीं दिया..तो सुख कितना दिया वो चेक करो..
- खुश रहे? हम तो खुश रहे..पर हमारी वजह से दुसरो को कितनी खुशी मिली वो चेक करो..

---

### ➤➤ अलबेलापन

»→ \_ »→ जो लाडले बच्चे होते हैं, वह लाडले होने की वजह से कभी कभी अलबेले हो जाते हैं..और नाज़ नखरे दिखाने लग जाते हैं..

→ नाज नखरे दिखाने की मैंन जड़ है **अलबेलापन..**

- अलबेलेपन में लाडले नहीं बनो..
- उसको छोड़ना है..
- उसका त्याग करना है..

---

### ➤➤ शांति

»→ \_ »→ शांति की शक्ति से स्वराज्य अधिकारी बनो..

→ शांति से हम अपने जीवन के सारे रहस्य को समझने क योग्य बन जाते हैं..

- शांति सादगी है..
- शांति आध्यात्मिकता है..
- शांति सादगी है..
- शांति मधुरता है..
- शांति तेजस्विता है..
- शांति द्रढ़ता है..
- शांति निस्ब्धता है..
- शांति मन की स्थिरता है..
- शांति से जीवन में खुशी आती है..
- शांति से अनुभवो की शक्ति बढ़ती है..
- शांति जीवन को तनाव मुक्त बनती है..
- शांति से आपके अंदर पवित्रता आती है..

- शांति से समस्याओं का समाधान की शक्ति आती है..
  - शांति से जीवन में सुरक्षा की भावना आती है..
  - शांति में ही विकास है..
  - शांति सबसे बड़ा धन है..
  - शांति चाहिए तो शांत रहो..
  - शांति चाहिए तो अशरीरी बने रहो..
  - शांति चाहिए तो परमधाम पहुँच जाओ..
- 

## ➤➤ प्रेम

➤➤\_ ➤➤ अधिक बोलने से दोष उत्पन्न होते हैं..मौन रहना महानता है..चुप रहेंगे तो १०० सुख पाएंगे..

➤➤\_ ➤➤ प्रेम की कसौटी क्या है??

→ जो वो कहता है..वो हम करते हैं..

→ त्याग..

→ REGULAR, PUNCTUAL जो अमृतवेला, मुरली क्लास करते हैं..

- प्रेम से कोई भी कार्य असम्भव से संभव हो जाता है..

➤➤\_ ➤➤ समय का सदुपयोग करना है..क्योंकि समय बड़ा बलवान है..समय को नष्ट करेंगे तो समय हमें नष्ट करेगा..समय से पहले हमको सुजाग रहना है..समय का सदुपयोग करके समर्थ रहना है..

---